अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने पूरी दुनिया में अपनी एक बहुत ही खास और मजबूत पहचान बना ली है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो की स्थापना के बाद से हमारे देश ने कई बड़े और ऐतिहासिक मुकाम हासिल किए हैं। शुरुआत में हमारे पास बहुत कम सुविधाएं थीं लेकिन हमारे वैज्ञानिकों की दिन रात की कड़ी मेहनत ने भारत को अंतरिक्ष की दुनिया में एक महाशक्ति बना दिया है। आज से कुछ दशक पहले जब हमने अपना पहला उपग्रह आर्यभट्ट अंतरिक्ष में भेजा था तब से लेकर आज तक हमने 100 से अधिक स्वदेशी उपग्रहों को सफलतापूर्वक पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया है। भारत का चंद्रयान मिशन पूरी दुनिया के लिए एक बहुत बड़ा उदाहरण है कि कैसे कम बजट में भी अंतरिक्ष के बड़े सपने पूरे किए जा सकते हैं। इस मिशन के तहत भारत दुनिया का पहला ऐसा देश बन गया जिसने चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अपना लैंडर सुरक्षित रूप से उतारा। इस ऐतिहासिक मिशन में 1000 से अधिक वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने लगातार 4 साल तक बहुत कड़ी मेहनत की थी। अंतरिक्ष विज्ञान का फायदा केवल आसमान तक सीमित नहीं है बल्कि इसका सीधा असर हमारे रोजमर्रा के जीवन पर भी पड़ता है। आज हम जो 5जी इंटरनेट या डायरेक्ट टू होम टीवी का इस्तेमाल करते हैं वह सब इन्हीं संचार उपग्रहों की वजह से ही संभव हो पाया है। मौसम विभाग भी आज सैटेलाइट की मदद से 5 से 7 दिन पहले ही आंधी और तूफान की सटीक जानकारी दे देता है जिससे हजारों लोगों की जान बचाई जा सकती है। खेती में भी उपग्रहों की मदद से मिट्टी की नमी और फसल की स्थिति का पता लगाया जाता है जिससे देश के लगभग 15 करोड़ किसानों को बहुत फायदा हो रहा है। इसके अलावा जीपीएस नेविगेशन सिस्टम की वजह से आज हम सड़क पर किसी भी नई जगह का रास्ता सिर्फ 2 मिनट में अपने मोबाइल पर देख सकते हैं। भारत ने मंगल ग्रह पर भी अपना मिशन बहुत ही कम खर्च में पूरा किया था। मंगलयान को बनाने में लगभग 450 करोड़ रुपये का खर्च आया था जो हॉलीवुड की कई फिल्मों के बजट से भी काफी कम था। पहले ही प्रयास में मंगल ग्रह की कक्षा में पहुंचने वाला भारत दुनिया का पहला देश बना था। इसरो न केवल अपने उपग्रह भेजता है बल्कि आज 30 से अधिक अन्य देशों के सैटेलाइट भी बहुत ही कम कीमत पर अंतरिक्ष में भेज रहा है जिससे देश को करोड़ों रुपये की विदेशी मुद्रा की कमाई हो रही है। अब भारत का अगला बड़ा लक्ष्य गगनयान मिशन है जिसके तहत 3 भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में भेजा जाएगा। इस मिशन के लिए देश के 4 वायुसेना पायलटों को विशेष ट्रेनिंग दी जा रही है। भारत अपना खुद का स्पेस स्टेशन बनाने पर भी तेजी से काम कर रहा है जिसका वजन लगभग 20 टन होगा और यह पृथ्वी से 400 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थापित किया जाएगा। आज देश के कई युवा छात्र भी अंतरिक्ष विज्ञान में बहुत रुचि ले रहे हैं। सरकार ने 500 से अधिक नए स्टार्टअप को इस क्षेत्र में काम करने की मंजूरी दी है जिससे युवाओं को नई तकनीक विकसित करने का मौका मिल रहा है। इन छोटी कंपनियों ने पिछले कुछ समय में 50 करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश हासिल किया है। भारत के इन सभी शानदार कदमों ने यह साबित कर दिया है